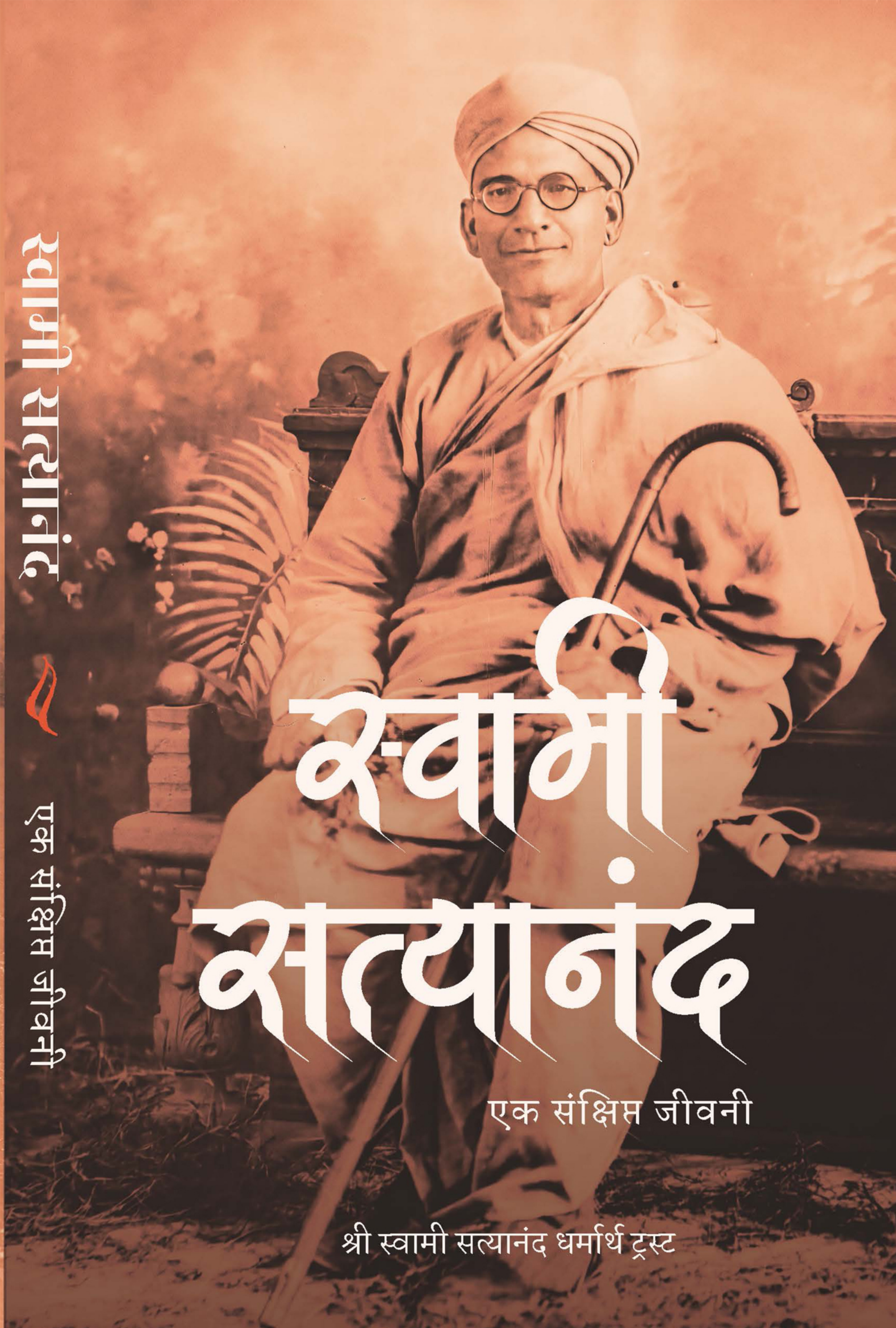


स्वामी सत्यानंद

एक संक्षिप्त जीवनी

श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट

"मैं सत्, नित्य, शुद्ध चैतन्य, शक्तिमय आत्मा हूँ।"
ऐसा बार-बार चिन्तन करना चाहिये।

— स्वामी सत्यानंद

"मैं ही वह अपरिवर्तनीय, परम सत्य हूँ —
शाश्वत, पवित्र, चेतन और शक्तिशाली आत्मा।"
मनुष्य को इसका बार-बार चिंतन करना चाहिए।

— स्वामी सत्यानंद



स्वामी जी का कमंडल —
संन्यास का प्रतीक

श्री स्वामी सत्यानंद धर्मार्थ ट्रस्ट का एक मात्र उद्देश्य स्वामी जी के आध्यात्मिक कार्यों को आगे बढ़ाना है। स्वामी जी के मार्गदर्शन में इस ट्रस्ट की स्थापना सन 1936 में लाहौर शहर में की गई। ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य स्वामी जी के ग्रंथों का प्रकाशन और प्रचार है, तथा नई दिल्ली स्थित श्रीरामशरणम् मुख्यालय और भारत व विदेशों में विस्तृत 75 से अधिक केंद्रों की गतिविधियों का पर्यवेक्षण है।

यह जीवनी, ट्रस्ट के शोध और प्रकाशन विभाग के प्रयासों का फल है और इसके संकलन में स्वामी जी के मौलिक लेखन और पत्राचार को आधार बनाया गया है।



नॉरवुड कॉटेज, डलहौज़ी



स्वामी सत्यानंद, अमृतवाणी के रचयिता और श्रीरामशरणम् के संस्थापक, ने भक्ति, प्रेम, करुणा और सेवा भाव का जीवन जीने के लिए एक अनूठा आध्यात्मिक मार्ग उजागर किया।

1868 में जन्मे, स्वामी जी की जीवन-यात्रा लगभग एक शताब्दी तक विस्तृत रही। उनकी आध्यात्मिक यात्रा छोटी आयु में अनाथ होने पर शुरू हुई, जब स्वामी जी जैन धर्म में शामिल हुए और लगभग दस वर्षों तक एक तपस्वी साधु का जीवन व्यतीत करते रहे। 1898 में उन्होंने आर्य समाज से जुड़कर संन्यासी का भगवा वस्त्र विधिवत धारण किया। पुरातन संस्कृत ग्रंथों के गहन अध्ययन के बाद स्वामी जी की गिनती आर्य समाज के ओजस्वी और प्रभावशाली प्रचारकों में होने लगी। इन दशकों में आर्य समाज का प्रभाव उत्तर भारत में उत्कर्ष पर था।

1925 में स्वामी जी ने दिव्य-दर्शन की लालसा से हिमालय के सानिध्य में एकांतवास किया। अविरल तप और ध्यान के बाद वह भागवत साक्षात्कार से पुरस्कृत हुए। गूढ़ आध्यात्मिक अनुभव और दिव्य प्रेरणा से उन्होंने अमृतवाणी की रचना की और सनातन हिंदू परंपरा पर आधारित एक विशिष्ट मार्ग दिखाया जिसे आज की जटिल आधुनिक दुनिया में प्रतिदिन सरल और सहज तरीक़े से आत्मसात किया जा सकता है। उन्होंने जाति, सामाजिक ऊँच-नीच और स्त्री-पुरुष के भेद-भाव को अस्वीकृत किया। स्वामी जी ने कोई नया संप्रदाय शुरू नहीं किया, अपितु यह सिद्ध किया कि संन्यास का आदर्श, गृहस्थों के लिए भी क्रोध, लोभ और ईर्ष्या से मुक्त जीवन के लिए सार्थक है।

स्वामी जी की विलक्षण जीवन-यात्रा इस प्रामाणिक जीवनी का केंद्र बिंदु है। सहज शैली में लिखित यह पुस्तक न केवल आधुनिक हिंदू धर्म में रुचि रखने वालों को, अपितु उन सभी को आकर्षित करेगी जो सरल, सार्थक और उत्कृष्ट जीवन जीने के लिए एक आध्यात्मिक मार्ग की खोज में हैं।